

वर्तमान पर्यावरण परिदृश्य—एक विनम्र प्रयास-समाधान

0. उद्देश्य— वर्तमान पर्यावरण परिदृश्य पर परस्पर चर्चा-परिचर्चा -
1. पर्यावरण अर्थात् जल, वायु, भूमि (स्थूल स्तर) और वातावरण (सूक्ष्म स्तर-आस्थाएँ, चिन्तन, भावनाएँ)
2. वर्तमान प्रगति— सच्चाई नकारें कैसे?
3. वर्तमान प्रगति पर एक प्रश्न— महत्ता ही नहीं सत्ता पर प्रश्नचिह्न?
4. वर्तमान प्रगति की वस्तुस्थिति खुली आँखों से— हमें पूर्वजों से क्या मिला? हमने अपने बच्चों को क्या दिया?— [6E's – Empathy > Energy > Ecology > Environment > Epidemics > Economy crises](#)
5. आश्चर्य इस बात का है— आगे कुआँ पीछे खाई की स्थिति में आगे पग बढ़ाते नहीं बन रहा है।
6. वर्तमान कार्यशैली—फूटे घड़े में पानी - सम्पदाओं का सदुपयोग-भाव-संवेदनाओं का महत्त्व
7. मौलिक कारण—कर्मफल की व्यवस्था / बोए हुए को काटने की अकाट्य व्यवस्था - प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण - अनावश्यक संचय और अवांछनीय उपभोग - भोगवादी जीवनशैली
8. वर्तमान दृष्टिकोण— प्रत्यक्षवादी तत्त्वदर्शन ने ही मनुष्य को स्वेच्छाचारी बनने के लिए प्रोत्साहित
9. वर्तमान समस्याओं की गहराई में उतरें—वर्तमान स्थिति - कुएँ में नशा, रक्त कैंसर - अधिकाधिक उसका संचय और अपव्यय
10. पूंगुरुसत्ता की भविष्यवाणी— प्राकृतिक जीवन-नारी- महासतयुग- निर्वाह मात्र के अर्थ साधन
11. समाधान?— करो (बचो) या मरो - विचार बदलें या शरीर बदलें - अब स्रष्टा ही उसे संतुलन में साध और ढाल सकता है - नवयुग के अनुरूप मनःस्थितियाँ एवं परिस्थितियाँ
12. समाधान किनसे-कैसे?—घटनाक्रम तो दृश्यमान शरीरों द्वारा ही - करने की जिम्मेदारी आप लोगों की, - वह दैवी सत्ता भी सतत सक्रिय है
13. समाधान के आधार—वसुधैव कुटुम्बकम् - एक चौथी शक्ति है-भाव-संवेदना - माता जैसा वात्सल्य
14. बस एक ही विकल्प—हम बदलेंगे (तो)-युग बदलेगा - वर्तमान स्थिति - कुएँ में नशा, रक्त कैंसर - **Bit by Bit & Byte by Byte change – Fusion reaction with love.** - सब अपने और अपने को सबका
15. समस्त समस्याओं का एकमात्र समाधान—हमारी पूंगुरुसत्ता की जीवनशैली - हमारे जीवन से कुछ सीखें - जिससे जितना बन पड़े अनुकरण का, अनुगमन का प्रयास करें। यह नफे का सौदा है, घाटे का नहीं।
16. कार्यशैली— गायत्री और यज्ञ के तत्त्वदर्शन-तकनीकी के उपयोग से सतत-सम्बन्ध - सतत-प्रयास - “बेटा, आने वाले समय में दुनिया अपनी समस्याओं का समाधान मेरे गीतों में और पूज्य गुरुजी के प्रवचनों (विचारों) में ढूँढ़ेगी।” — वं० माताजी - पथ्य / मार्गदर्शन - ग्रहण करना (स्थूल स्तर) + स्वीकारना + पचाना / धारण-आत्मसात करना (सूक्ष्म/मन स्तर - बुद्धि + भाव) - समझना = जानना + मानना **Acceptibility = (Reception + assimilation)**

भौतिक विज्ञानी बढ़ते हुए प्रदूषण और तापमान को भावी विनाश की पूर्व भूमिका बताते हैं।...P13-VPKAP
खतरा समस्त मानव जाति को और युगों-युगों का संचित संस्कृति को है।...P17-VPKAP

6E's— Empathy > Energy > Ecology > Environment > Epidemics > Economy crises
Empathy > Interacting “Mother Earth” as “Matter Earth”
Energy Imbalance > Accumulated energy equals at least 400,000 Hiroshima level atom bomb per day (James Hansen, Ex. head of the NASA Goddard Institute, 2012 data)
Ecology > Extinction of 150–200 species per day.
Environment > climate.nasa.gov CO2 level > 404.07ppm
Epidemics > Continuously increasing health problems.
Economy > Total global debt is about \$60 trillion in 2016.

Technology must include –

1. “**Mind over Mind**” effect–inspiration–control – ज्ञान–पक्ष – गायत्री विज्ञान – Software Management
2. “**Mind over Matter**” effect–inspiration–control – विज्ञान–पक्ष – सावित्री विज्ञान – Hardware Management – स्वामी विशुद्धानन्द जी
3. Help guidance / connection / interaction / collaboration with higher authority – power source – संरक्षण–मार्गदर्शन–प्रेरणा–सहयोग
भागवत–सत्ता, पू. गुरुसत्ता, ऋषि–सत्ता, उन्नत अंतरिक्षीय प्राणी